मूँग की वैज्ञानिक खेती

राँची में 2015-16 में 1823 हे. क्षेत्र में मूँग की खेती की गयी। जिसकी उत्पादकता 375 कि.ग्रा. प्रति हे. थी।

खेत की तैयारी : मूँग की अच्छी पैदावार के लिये खेत की एक बार गहरी जुताई मिट्टी पलट हल से करके दो जुताई देशी हल या कल्टीवेटर से करें। प्रत्येक जुताई पर पाटा मार दें जिससे खेत की नमी बनी रहे तथा मिट्टी भुरभुरी हो जाय। खेत को समतल करके जल निकास युक्त बनायें।

दलहनी फसलों के समावेश से कृषि उत्पादन एवं भूमि की उर्वरा शक्ति की वृद्धि में काफी सहायोग मिल सकता है। जायद में दलहनी फसलें जैसे मूंग, उड़द या लोबिया के उत्पादन पर विशेष रूप से ध्यान देना चाहिए, क्योंकि इनसे दालों के उत्पादन में वृद्धि होगी ही, साथ ही साथ भूमि की उर्वरा शक्ति में भी वृद्धि होगी। दलहनी फसलों की फलियाँ तोड़ने के उपरांत फसल को जुताई करके मिला देना चाहिए। ऐसा करने से भूमि में जीवांश पदार्थ की वृद्धि होगी जिससे भूमि की जैविक, रासायनिक व भौतिक गुणों में भी सुधार होगा।

राँची में मूँग खेती के अंतर्गत अच्छादित क्षेत्र काफी कम है। इसकी वृद्धि हेतु यह आवश्यक है कि मूँग की खेती का प्रचलन हो। जायद ऋतु तथा गरमा में मूँग की खेती कर किसान अपने खाली पड़े खेतों को उपयोग में ला सकते हैं। साथ ही अपनी आय में वृद्धि भी कर सकते हैं।

गरमा मूँग की वैज्ञानिक खेती

उन्नत प्रभेद : खरीफ मूँग : बसन्त, पी.डी.एम. 84-143, पी.डी.एम.-11, पी.डी.एम.-139, आई.पी.एम. 2-3, आई.पी.एम. 99-125, पी.एम.-5, एस.एम.एल.-668, पी.एस. 16, पूसा वैशाखी, सुनैना, पी.एस.-10, पी.एस.-7 पूसा विशाल, सम्राट। **बीज दर :** 20 किलो/हे.। **दूरी :** पंक्ति से पंक्ति एवं पौध से पौध 20 सें.मी.।

गरमा मूँग : आई.पी.एम. 2-3, एस.एम.एल.-668, पी.एम.-5, टी.बी.एम.-37, पी.डी.एम.-54, पी.एस.-16, आई.पी.एम. 99-125, एच.यू.एम.-12, एच.यू.एम.-16, पी.डी.एम.-11, पूसा विशाल। **बीज दर :** 30 किलो/ हे.।

बीजोपचार : मूँग की अच्छी पैदावार लेने के लिए बीजों को मूँग के राइजोबियम कल्चर से उचारित करना चाहिए। आधा लीटर पानी में 50 ग्राम गुड़ का घोल बनाकर उबाल लें और ठंढा कर लें। ठंढा होने के बाद इस घोल में राइजोबियम कल्चर के एक पैकेट को मिला दें तथा 10 किलो बीज के ऊपर इस मिश्रण को छिड़ककर कर अच्छी तरह मिला लें। इसके बाद उपचारित बीज को 2-3 घंटों तक छाया में सुखाकर बोआई करें। इसी तरह पी.एस.बी. से भी उपचारित करके बोना चाहिए।

बोआई का समय : खरीफ : जून के प्रथम सप्ताह से जुलाई के मध्य तक। **गरमा :** फरवरी में।

खाद एवं उर्वरक : 20 किलो नेत्रजन; 40 किलो फॉस्फोरस; 20 किलो पोटाश प्रति हेक्टेयर। अम्लीय मिट्टी में बोआई पूर्व चूने के 3-4 क्विंटल/हे. की मात्रा का प्रयोग किया जाना चाहिए।

सिंचाई : 3 बार – पहली सिंचाई बोआई के समय, दूसरी 20-25 दिनों बाद तथा तीसरी और अंतिम सिंचाई 50 दिन बाद दिया जा सकता है।

खर-पतवार नियंत्रण : हाथ द्वारा दो बार–प्रथम बोआई के 25 दिन तथा द्वितीय 40 दिन बाद। श्रमिकों की कमी वाले क्षेत्रों में खरपतवारनाशी रसायन पेन्डीमिथैलिन (2%) का घोल बनाकर बोआई के तुरंत बाद छिड़काव करना चाहिए।

×××××